जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 48 संख्याः 90 प्रभात कोटा, गुरुवार 12 जनवरी, 2023 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

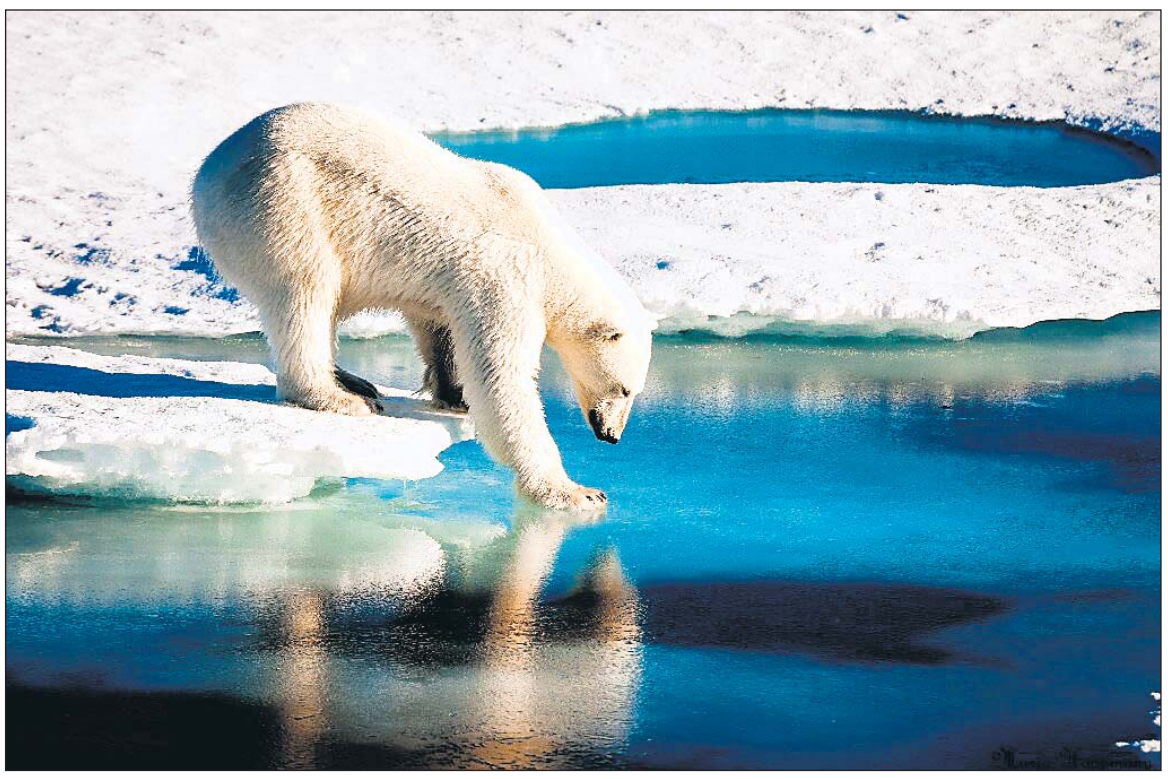

पोलर बेयर (ध्रुवीय भालू) उस क्षेत्र से ही लुप्त हो रहे हैं जिसे ''पोलर बेयर कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड'' कहा जाता है। कैनेडा सरकार ने एक सर्वे में बताया कि कैनेडियन आर्कटिक के दक्षिणी सिरे पर हडसन खाड़ी के पश्चिमी भाग से ध्रुवीय भालू तेजी से लुप्त हो रहे हैं। सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार, मादा और विशेषकर शावकों की संख्या में नाटकीय गिरावट आई है। पांच सालों में एक बार शोधकर्ता पोलर बेयर की गणना के लिए इस क्षेत्र का एरिअल सर्वे करते हैं, जिसमें ''चर्चिल'' शहर भी शामिल है और इसे ही ''पोलर बेयर कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड'' कहा जाता है। वर्ष 2021 के अगस्त -सितम्बर में हुए सर्वे की रिपोर्ट हाल ही में जारी हुई। उसके अनुसार शोधकर्ताओं ने 194 भालू देखे तथा इनकी अनुमानित आबादी 618 बताई, जो कि पांच साल पहले की अनुमानित आबादी 842 से कम है। रिर्पोट के अनुसार वर्ष 2011 और 2016 के हवाई सर्वे अनुमानों की तुलना करें तो भी संकेत मिलता है कि, हडसन खाड़ी में इनकी आबादी संभवतया घट रही है। यह भी पता चला है कि 2011 से 2021 के बीच मादा व अवयस्क भालुओं की संख्या में काफी कमी आई है। शोधकर्ता कहते हैं कि, यह गिरावट उन भविष्यवाणियों के अनुरुप है जो ध्रुवीय भालुओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देखते हुए की गई थीं। इसके लिए शोधकर्ताओं ने समीपवर्ती क्षेत्रों के विस्थापन व अवैध शिकार को भी एक कारण बताया। शोध के अनुसार, ध्रुवीय भालुओं के सी आईस आवास तेजी से लुप्त हो रहे हैं, क्योंकि यह सुदूर उत्तरी भाग शेष विश्व की तुलना में चार गुना तेजी से गर्म हो रहा है। यहां सी आईस की परत अब कम मोटी होती है और बसंत से पहले ही टूट जाती है तथा शरद के आगमन के बहुत बाद में बनती है। ध्रुवीय भालू भोजन के लिए सील का शिकार करने, प्रजनन आदि कार्यों के लिए सी आइस पर निर्भर रहते हैं। यू.एस. नैशनल स्नो एण्ड आईस डेटा सैंटर के अनुसार हडसन खाड़ी में 1980 के दशक के बाद से सी आइस में 50 प्रतिशत कमी आई है। दो साल पहले, जर्नल नेचर क्लाइमेट में छपी रिपोर्ट के अनुसार, यदि यही स्थिति रही तो ध्रुवीय भालू विलुप्ति के कगार पर पहुंच सकते हैं।

'हिन्दुस्तान को हिन्दुस्तान ही रहना चाहिए'

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने '23 को विधानसभा चुनाव और '24 के लोकसभा चुनाव की थीम निश्चित की

- ''हिन्दू राष्ट्रवाद'' को इन चुनावों का वैचारिक मुद्दा तय किया संघ प्रमुख ने।
- इसी लय में भागवत ने कहा ''हिन्दू समाज युद्ध का सामना कर रहा है। विदेशी आक्रमणकारी तो नहीं, पर विदेशी प्रभाव व साजिशें मौजूद हैं जिनसे हिन्दू समाज व धर्म की रक्षा करनी है।
- एक तरह से परोक्ष धमकी देते हुए भागवत ने यह भी कहा कि, क्योंकि युद्ध की स्थिति है अतः लोग अति उत्साही (ओवर ज़ैलस) हो सकते हैं। हालांकि यह हमारी इच्छा नहीं है, पर इस माहौल में उत्तेजनात्मक भाषणबाजी भी हो सकती है।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत ने यह कहते हुए कि ''हिन्दुओं की मुखरता'' विदेशी शक्तियों के विरूद्ध किए गए हजारों वर्षों के संघर्ष के बाद आई स्वाभाविक जागरुकता का परिणाम है'', वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों का बिगुल बजाकर भाजपा के लिए एजेण्डा तय कर दिया है। एक तरफ तो देश बढ़ती मंहगाई और बढ़ती बेरोजगारी के बीच आर्थिक गिरावट का सामना कर रहा है, वहीं आर.एस.एस. और भाजपा ने वर्ष 2023 में होने जा रहे महत्वपूर्ण विधानसभा चुनावों के लिए अनुभूत और परीक्षित हिन्दू-राष्ट्रवाद के मुद्दे पर स्पष्ट रूप से भरोसा जताया है।

इन चुनावों के बाद अगले वर्ष लोकसभा चुनाव हैं। भागवत, जो कि पिछले कुछ समय से मुस्लिम हस्तियों और बुद्धिजीवियों से मुलाकात करते रहे हैं, अब पुनः गुरु गोलवलकर की विचारधारा पर लौट आए हैं। उन्होंने मुस्लिमों से कहा है कि वे अपने सर्वश्रेष्ठ होने का भाव त्याग दें।

आर.एस.एस. समर्थित प्रकाशनों ''ऑर्गनाइजर'' और पाँचजन्य को दिए एक विस्तृत साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि ''हिन्दुस्तान-हिन्दुस्तान ही रहना चाहिए।''

चूंकि भागवत मुस्लिम समुदाय को अपनी विचारधारा त्यागने के लिए कह रहे हैं तो उनके लिए उनका संदेश मुखर एवं स्पष्ट है।''हिन्दुस्तान पर कभी शासन करने वाले महान लोग होने का उनका ऊंचा दावा और इस पर फिर से शासन करेंगे, और यह कि हमारा मार्ग सही है तथा अन्य सभी का गलत।''

आर.एस.एस. के सरसंघचालक के शब्द राहुल गांधी की ''भारत जोड़ो यात्रा'' के दौरान उठाए गए ''आजीविका'' मुद्दों की ओर इशारा करते भी प्रतीत होते हैं। ''हिन्दू समाज युद्धरत है। यह युद्ध किसी बाहरी शत्रु के खिलाफ नहीं एक भीतर के शत्रु के विरूद्ध है। यह युद्ध हिंदू समाज, संस्कृति की रक्षा के लिए है। देश मं फिलहाल विदेशी आक्रांता मौजूद नहीं है, लेकिन विदेशी प्रभाव और विदेशी षड़यंत्र धारी है। बात युद्ध की है तो लोगों का ईर्ष्यालु होना संभव है, हालांकि ऐसा नहीं होना चाहिए, फिर भी भड़काऊ बयान दिए जाएंगे।'' इस बयान में प्रकट रूप से एक छद्म धमकी भी है।

भागवत का हिंदुओं की प्रधानता पर जोर देना भारतीय संविधान में वर्णित स्वतंत्रता, समानता औरा भ्रातृत्व के सिद्धांतों के विपरीत है। उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले महीनों में हिंदुत्व की थीम मीडिया में छाई रहेगी।

'रुस अगले दस वर्ष में असफल देश बनकर टूट जायेगा'

एटलान्टिक काउन्सिल, वॉशिगटन में स्थित थिंक टैंक, की फायनैंशियल एक्सप्रेस में छपी रिपोर्ट ने दावा किया

- थिंक टैंक ने विदेशी मामलों के विशेषज्ञों का सर्वे कर यह निष्कर्ष निकाला है। सर्वे के अनुसार 167 विशेषज्ञों ने सर्वे में भाग लिया था, रुस के टूटने के पक्ष में 46 प्रतिशत विशेषज्ञ थे।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। यूक्रेन पर आक्रमण के बाद रूस स्वयं के विरूद्ध लागू किए गए निर्यात नियंत्रणों और प्रतिबंधों से निर्बल हो चुका है। विदेश नीति विशेषज्ञों के अनुसार रूस के लिए इसके गंभीर दुष्परिणाम होंगे या उसकी आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था इतनी कमजोर हो जाएगी कि उस पर उनका नियंत्रण नहीं रह जाएगा और यहां तक कि अब से 10 वर्ष बाद उसका विघटन भी हो सकता है।

एटलांटिक काउन्सिल द्वारा किये गए एक सर्वे का कहना है कि अधिकांश विशेषज्ञों को उम्मीद है कि उथल-पुथल भरे इस दशक में चीन ताइवान पर जबरन कब्जा करने की कोशिश कर सकता है।

एटलांटिक काउन्सिल एक अमेरिकन थिंक टैंक है जिसका कार्य क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय मामलात हैं और उसका मुख्यालय वॉशिंटगन डी.सी.में है।

द फायनैंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट कहती है कि थिंक टैंक सर्वे के कुल 167 विशेषज्ञ प्रतिभागियों में से 46 प्रतिशत ने कहा कि अगले 10 वर्षों में रूस विफल हो सकता है अथवा उसका विघटन हो सकता है।

एक अलग प्रश्न पर 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने रूस को एक ऐसा देश बताया जिसे लेकर उनका मानना है कि आगे आने वाले समय में वह क्रांति, गृह युद्ध या राजनीतिक विघटन आदि के कारण टूट सकता है। एटलांटिक काउन्सिल की फोरसाइट विंग के उप निदेशक पीटर एंगल्के, जिन्होंने सर्वे के डिजाइन और भाषान्तर में मदद की है, ने कहा कि ''यूक्रेन स्पष्ट रूप से रूस के लिए आंतरिक समस्याओं की संभावनाओं को दर्शाता है और इस आशंका को भी कि इस युद्ध का ना केवल उसके नेतृत्व बल्कि पूरे देश पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। पश्चिमी देशों के अधिकारी कहते हैं कि यूक्रेन पर 11 माह पूर्व किए गए आक्रमण और स्वयं पर लग चुके निर्यात नियंत्रणों और प्रतिबंधों के कारण रुस बहुत कमजोर पड़ चुका है।

अर्थशास्त्रियों का मानना है कि दण्डात्मक उपायों के परिणामस्वरूप रुस की उत्पादन क्षमता लगातार कम हो रही है। इससे देश दशकों पीछे चला गया है। रुस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने सार्वजनिक रुप से यह मानना शुरु कर दिया है कि मॉस्को को यूक्रेन में असफलताएं मिल रही हैं और यह संघर्ष लम्बे समय तक चलेगा। अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगियों ने प्रण किया है कि वे अंत तक यूक्रेन का सहयोग करेंगे। उनकी योजना इस युद्ध कों बरसों तक जारी रखने की है।

यहां तक कि यूरोप भी द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद क्षेत्र के सबसे बड़े भूमि विवाद का साक्षी बन रहा है। सर्वे में भाग लेने वाले अधिकांश विशेषज्ञों ने कहा कि उन्हें इस पर विश्वास नहीं है कि रुस और नाटो अगले दशक में एक सीधा सैन्य संघर्ष करेंगे।

तथापि प्रतिभागियों ने अमेरिकी अधिकारियों द्वारा लगातार दी जा रही इन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट का सर्वर डाउन

- बुधवार को सुप्रीम कोर्ट डेटा सेंटर का सर्वर डाउन होने से सुप्रीम कोर्ट का कामकाज बाधित हुआ। सुप्रीम कोर्ट से जारी विज्ञप्ति में जल्द से जल्द तकनीकी खामी दूर करने का आश्वासन दिया गया है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। बुधवार को सुप्रीम कोर्ट की कई कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स एवं आई.टी. सेवाएं बाधित हो गई क्योंकि इसके डेटा सैंटर के एक सर्वर में तकनीकी खामी आ गई।

इस वजह से ई कॉपीइंग, एस.सी.आई. इन्जेशन, एस.सी.आई. इन्टरैक्ट, पी.ए.सी.ई. अटैंडैंस, सिक्योर गेट, एस.सी.ई.एफ.एम. (ई फाईलिंग न्यू) व अन्य संबंधित एप्लीकेशन्स ठप्प पड़ गईं। सुप्रीम कोर्ट की एक प्रैस रिलीज में कहा गया कि ''हम आपको आश्वासन देते हैं कि हमारी टीम इस मुद्दे को देख रही है। सभी आई.टी. सेवाओं को बहाल किया जाएगा। कृपया ध्यान दीजिए कि हमारी वेबसाईट WWW.sci.gov.in में इस वजह से कटौती हो सकती है। असुविधा के लिए खेद है।''

कर्नाटक में कांग्रेस ने ''प्रजा ध्वनि'' नाम से यात्रा शुरु की

बेलागावी से शुरु हुई यह यात्रा दो दिशाओं में जायेगी

- यात्रा के एक हिस्से का नेतृत्व पूर्व मु.मंत्री सिद्धारमैय्या करेंगे तथा दूसरे हिस्से का कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष डी.के.शिवकुमार।
- यात्रा बसों द्वारा पूरी की जायेगी, जिससे कर्नाटक की 224 सीटों को कवर कर सकें।
- यात्रा की एक प्रमुख थीम होगी, भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार, जिसके कारण कांग्रेस इसे 40 प्रतिशत कमीशन की सरकार कहती है।

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। जहाँ राहुल गांधी की ''गैर-राजनैतिक'' भारत जोड़ो यात्रा अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रही है, वहीं कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी ने बुधवार को बेलागावी से एक पूर्णत: राजनैतिक यात्रा, बल्कि ''प्रजा ध्वनि'' नाम से एक चुनाव-प्रचार यात्रा शुरु कर दी।

कर्नाटक कांग्रेस के दो शीर्ष नेताओं- पूर्व मुख्यमंत्री एस. सिद्धारमैया तथा पी.सी.सी. अध्यक्ष डी.के. शिव कुमार ने एकता की तस्वीर प्रस्तुत करते हुये, परस्पर मिलकर इस ''प्रजा-ध्वनि'' यात्रा की शुरुआत कर दी। यह यात्रा सभी 224 विधानसभा क्षेत्रों में जायेगी। जहाँ भारत जोड़ो यात्रा का फोकस ''भाजपा-आर.एस.एस. संगठनों द्वारा कथित रूप से फैलायी जाने वाली नफरत एवं फूट का प्रतिकार करने पर है, वहीं कर्नाटक कांग्रेस की ''प्रजा ध्वनि'' यात्रा की योजना राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा एवं उसकी सरकार को घेरने के उद्देश्य से बनाई गई है। इस यात्रा को उक्त दोनों कांग्रेस नेता अलग-अलग समूह में बसों में संचालित करेंगे तथा वे अधिकतम जगहों तक पहुँच सकें। यह यात्रा तीन-चार महीने के बाद होने वाले चुनावों के प्रचार की रणनीति के ट्रेलर के रूप में देखी जा सकती हैं। यात्रा के शुभारम्भ के अवसर पर बोलते हुये, शिव कुमार ने भाजपा पर ''अनैतिक एवं असंवैधानिक 'ऑपरेशन कमल' चलाने के लिये, भाजपा पर जोरदार हमला बोला तथा लोगों को सरकार द्वारा 40 प्रतिशत कमीशन लिये जाने की याद दिलाई।

शिव कुमार ने कहा, ''कर्नाटक की उन्नति बैकसीट पर पहुँच गई है क्योंकि भाजपा 40 प्रतिशत कमीशन के जरिये लोगों से अनियंत्रित लूट में लग गई है तथा 2018 के चुनावों के दौरान किये 90 प्रतिशत वादे भूल गई है। वे (भाजपा) साम्प्रदायिक राजनीति तथा (राज्य को) गतिहीन कर देने वाली नीतियों पर फोकस करने में लगी हुई है।'' उन्होंने कहा कि राज्य की वर्तमान दुर्व्यवस्था के लिये डबल इंजन सरकार तथा इसकी असफल नीतियाँ जिम्मेदार हैं। उन्होंने आगे कहा कि प्रजा ध्वनि यात्रा भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार को उजागर करेगी तथा इसके द्वारा बोले गये सभी झूठों का पर्दाफाश करेगी।

यह यात्रा विभिन्न चरणों में सभी जिलों में जायेगी जिससे राज्य में चुनाव होने से पहले, पार्टी नेता पूरे कर्नाटक को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की पंजाब यात्रा का समय बहुत सही मान रहे हैं

इसी समय पंजाब प्रशासनिक सेवा के अफसर व कर्मचारी सरकार से नाराजगी के कारण अब हड़ताल पर चले गये हैं

- मु. मंत्री भगवंत सिंह मान ने इस हड़ताल को गैर कानूनी घोषित कर हड़तालियों के खिलाफ कार्यवाही के आदेश दे दिये हैं।
- पंजाब कांग्रेस के नेता चाहते हैं कि, राहुल गांधी पंजाब में बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थिति व अन्य स्थानीय मुद्दों पर फोकस करें, यात्रा के दौरान।
- नेता लोग यह भी चाहते हैं कि, पंजाब में खेमेबाजी में बंटी पार्टी को स्पष्ट संकेत दें कि पंजाब में कांग्रेस का नेतृत्व किस के हाथ में रहेगा।
- हाफ स्लीव टी शर्ट पहने, साफा बांधे राहुल गांधी ने गुरुदास फतेहगढ़ साहिब से यात्रा का पंजाब अध्याय शुरु किया।
- ठण्ड के बावजूद भारी भीड़ यात्रा से जुड़ी तथा विशेष चर्चा का विषय यह था कि, राहुल टी शर्ट में नंगे पैर कैसे फतेहगढ़ गुरुद्वारे व सरहिन्द दरगाह में आराम से दर्शन कर रहे हैं, चार डिग्री तापमान की ठण्ड में।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। आज पंजाब में भारत जोड़ो यात्रा का शुभारम्भ राहुल गांधी द्वारा ऐतिहासिक गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब में मत्था टेकने तथा श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के साथ हुआ। यात्रा के पंजाब-प्रवेश से राज्य के कांग्रेस नेतृत्व के मनोबल में अपूर्व वृद्धि हुई है। दरअसल, पंजाब में यात्रा का प्रवेश ठीक उस समय हुआ है, जब सिविल सेवा अफसरों के साथ ही, सरकारी कर्मचारियों और भगवंत मान सरकार के बीच विजिलैंस ब्यूरो द्वारा भ्रष्टाचार के केसों से निबटने के तौर-तरीकों को लेकर पैदा हुआ अलगाव एवं फासला बढ़ता जा रहा है।

पंजाब के कांग्रेस नेताओं को उम्मीद है कि अफसरों में बढ़ते जा रहे असंतोष तथा नौ दिन तक पंजाब में इस यात्रा के शहरी तथा ग्रामीण सीमावर्ती क्षेत्रों से गुजरने से पंजाबवासियों को पर्याप्त अवसर एवं कारण मिलेंगे कि वे इस नतीजे पर पहुँच सकें कि राज्य का नेतृत्व किस दल के पास होना चाहिये।

इस बीच, पंजाब के सिविल सेवा अफसरों की हड़ताल प्रचंड रूप में आ चुकी है क्योंकि मुख्यमंत्री भगवंत मान ने हड़ताल को गैर कानूनी घोषित कर दिया है तथा सख्ती बरतने (क्रैक डाउन) के आदेश जारी कर दिये हैं।

2024 के आम चुनावों को ध्यान में रखते हुये, राहुल गांधी ने केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा पर निशाना साधा तथा कहा कि इस यात्रा का आयोजन लोगों को अपनी बात खुलकर कहने तथा उनकी बात सुने जाने के लिये ही किया गया है। लेकिन पंजाब के कांग्रेस नेताओं ने राहुल गांधी से यह अनुरोध किया बताते हैं कि राज्य की ''बिगड़ती जा रही कानून-व्यवस्था'' तथा अन्य मुद्दों पर राज्य सरकार की बखिया उधेड़ दें।

एक वरिष्ठ नेता ने कहा, ''प्रतीकात्मकता की राजनीति तथा पगड़ी बाँध लेना ही सिख समुदाय के इस बात के लिये आश्वस्त करने के लिये पर्याप्त है तथा इन चीजों से उनका ध्यान आसानी से अपनी ओर खींचा जा सकता है। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष के लिये जरूरी है कि पंजाब के मुद्दों को स्पर्श करें।''

चूँकि 2022 के विधानसभा चुनावों में मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में दलित सिख नेता चरणजीत सिंह चन्नी को प्रोजैक्ट करने का राहुल गांधी का निर्णय असफल रहा था, इसलिये राहुल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जात आधारित जनगणना के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका

- बिहार में होने जा रही जात आधारित जनगणना के खिलाफ दायर इस याचिका की त्वरित सुनवाई के लिए भी सुप्रीम कोर्ट सहमत हो गया है और इस पर शुक्रवार को सुनवाई होगी।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक वकील की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली की बिहार की जातिगत जनगणना के खिलाफ दायर याचिका की त्वरित सुनवाई की जाए। चीफ जस्टिस डी.वाय. चंद्रचूड़ 13 जनवरी शुक्रवार को याचिका की सुनवाई करेंगे। इससे पहले एक सामाजिक कार्यकर्ता अखिलेश कुमार ने भी एक याचिका दायर की है। उन्होंने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

14 वर्षीय बालिका ने गर्भपात के लिए याचिका दायर की

- बालिका ने अपनी माँ के मार्फत सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर 16 हफ्ते का गर्भ गिराने की अनुमति मांगी है, क्योंकि वह बच्चे को पालने के लिए शारीरिक व मानसिक रुप से फिट नहीं है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 जनवरी। दिल्ली हाई कोर्ट में 14 वर्षीय बालिका ने अपनी मां के जरिए 16 हफ्ते का गर्भ गिराने की अनुमति मांगते हुए याचिका दायर की है। हाई कोर्ट 18 जनवरी को सुनवाई करेगा। बताया जाता है कि नाबालिग लड़की के अपने नाबालिग मित्र के साथ आपसी सहमति से संबंध बने थे जिससे वह गर्भवती हो गई थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)